अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका



वर्ष : 50 अंक : 9 भाद्रपद-आश्विन वि.सं. 2080 सितम्बर, 2023 सहयोग राशि- अठारह रुपये पृष्ठ-28 RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x





समिति में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में 77 वां स्वतंत्रता दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। समिति की संयुक्त सचिव श्रीमती नीलम अग्रवाल ने समिति मुख्यालय पर तिरंगा फहराया। इसके बाद उन्होंने समिति के रमेश थानवी वत्सल औषधि वन में एक पौधा भी रोपा।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर वनस्पतिविज्ञ डॉ. देवदत्त शर्मा ने भी समिति परिसर में वृक्षारोपण किया। डॉ. शर्मा ने अमरूद, कदम्ब, शहतूत, कचनार और बांस के पौधे समिति को भेंट किए थे। समिति में शाकाहार के सहयोगी मुकेश पाण्डेय तथा बागवान सीताराम ने भी उनके साथ औषधि वन में वृक्षारोपण किया।

समिति के औषधि वन में सौ से अधिक प्रकार के पेड़-पौधे हैं जहां किसी प्रकार की रसायनिक खाद तथा कीटनाशक का उपयोग नहीं होता।❑







वाणी

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति
विज्ञाय चार्थ भते न कामात्।
नासम्पृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थेतत्
प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य ।।

–विदुर नीति श्लोक

ज्ञानी लोग किसी भी विषय को शीघ्र समझ लेते हैं, लेकिन फिर भी उसे धैर्यपूर्वक देर तक सुनते रहते हैं । अपने कार्य को कर्तव्य समझकर करते है, कामना समझकर नहीं, और व्यर्थ किसी के विषय में बात नहीं करते। ❑

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 50 अंक : 9 भाद्रपद-आश्विन वि.सं. 2080 सितम्बर, 2023

क्र म



आवरण : चन्द्रयान-3 का प्रक्षेपण

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति

7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,

जयपुर-302004

फोन : 2700559, 2706709, 2707677

ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

चन्द्रयान–3 मिशन : गर्व के क्षण

भारत के चंद्रयान–3 मिशन की सफलता ने इतिहास रच दिया है। सारी दुनिया की निगाहें इस पर टिकी थीं। इस सफलता के साथ ही भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर अपना यान उतार कर वहां की खोज करने वाला पहला देश बन गया है। चांद पर सॉफ़्ट लैंडिंग करने वाला वह चौथा देश है। इससे पहले रूस, अमेरिकाऔर चीन ने चंद्रमा पर सॉफ़्ट लैंडिंग की है। यह उपलब्धि भारतीय विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है जो अंतरिक्ष अन्वेषण में हमारे देश की प्रगति का पता देती है। सभी भारतीयों के लिए यह स्वाभाविक ही गर्व करने का अवसर है।





आजादी के बाद 1951 में हुई पहली जनगणना में देश की कुल साक्षरता दर केवल 18.33 प्रतिशत थी जिसमें पुरुषों की साक्षरता 27.16 प्रतिशत और स्त्रियों की 8.66 प्रतिशत थी। निरक्षरता की गहरी खाई से निकल कर विज्ञान की इतनी ऊंची छलांग शिक्षा के क्षेत्र में हमारी उपलब्धियों को भी उजागर करती है, हालांकि वहां अब भी बहुत कुछ करना बाकी है और किया जा रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन – इसरो – के वैज्ञानिक, जिन्होंने यह कामयाबी कर दिखाई हैं, वे लोग हैं जिन्होंने इसी देश के स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाई की है और यहीं के शिक्षकों से पढ़ें, सीखे हैं। इस कामयाबी से देश का नाम रोशन करने वाले इन वैज्ञानिकों में सभी वर्गों, धर्मों, प्रांतों और भाषाओं वाले लोग शामिल हैं। और सबसे बड़ी बात यह कि इनमें भारतीय महिला वैज्ञानिकों की भी प्रमुख भूमिका रही है। इस प्रकार इसरो की टीम एक नये भारत की तस्वीर पेश करती है। चंद्रयान-3 मिशन ने देशवासियों के मन में गर्व और एकता की जो गहरी भावना पैदा की है उसी के चलते हम भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शक्ति का सामूहिक रूप से जश्न मना रहे हैं।

चांद पर भारतीय यान की सॉफ्ट लैन्डिंग एक ऐतिहासिक क्षण था। यह अकस्मात हुई घटना नहीं है। इसके लिए भारतीय वैज्ञानिकों की बरसों की लगन, मेहनत और मेधा है। उनके काम को वर्तमान तथा पूर्ववर्ती सरकारों का समर्थन भी कम करके नहीं आंका जा सकता।

भारत ने साल 2008 में पहली बार चंद्रयान-1 उपग्रह को चांद पर भेजा था। इसरो के चंद्रयान-1 के मून इम्पैक्ट प्रोब, चंद्रयान-2 के विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर को भी उसी क्षेत्र में उतरने के लिए भेजा गया था। हालांकि इससे पहले दोनों मौक़ों पर इस बार जैसी सफलता नहीं मिली थी। चंद्रयान-1 का मून इम्पैक्ट प्रोब, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, मगर उसने यह जानकारी अवश्य दी कि चांद के दक्षिण ध्रुव पर पानी है। चंद्रयान-2 के लैंडर से सॉफ्ट लैंडिंग के आख़िरी मिनट में संपर्क टूट जाने से वह चांद की सतह पर गिर पड़ा था। मगर विज्ञान में कोई असफलता अंतिम नहीं होती। प्रत्येक प्रयास में नया सीखने को मिलता है। हमारे वैज्ञानिकों ने नया सीखा और अंततः चंद्रयान-3 मिशन में बड़ी सफलता पा ली।

हालांकि चांद तक की ये रेस 1960 के दशक में शुरू हुई थी। उस वक़्त अमेरिका और सोवियत संघ के बीच ये होड़ थी कि चांद पर सबसे पहले इंसान को कौन उतार सकता है। पृथ्वी की कक्षा में पहला सैटलाइट स्थापित करने, अंतरिक्ष में पहली बार इंसान को भेजने और मानवरहित मिशन को चांद पर उतारने के मामले में रूस बाज़ी मार ले गया। लेकिन अपोलो मिशन के ज़रिये अमेरिका ने चांद की सतह पर पहली बार इंसान को उतारकर यह बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली। बाद में बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा चीन भी वहां पहुंचा। चंद्रयान-3 मिशन ने उनकी ऊंचाइयों पर भारत का परचम फहराया है।



यह मौका है जब शिक्षा में लगे सभी लोग देश के नागरिकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में दूने जोश से लग जायें। ❑ **आशा बोथरा**

बहुत देर होने से पहले शिक्षा और रोजगार के बीच अंतर से निपटना होगा



आदित्य नटराज



मेकिन माहेश्वरी



प्रिया अग्रवाल

गैर सरकारी तथा स्वयंसेवी जगत के तीन प्रमुख लोग इस आलेख में माध्यमिक शिक्षा को अपने युवाओं की आकांक्षाओं के अनुरूप बनाने की आवश्यकता बता रहे हैं। इसके लिए वे रास्ते भी सुझा रहे हैं। ❑ सं.

❑

वित्त वर्ष 2024 के लिए अनुमानित 6.5 प्रतिशत विकास दर के साथ, भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। लेकिन इस वृद्धि का क्या मतलब है, और क्या शिक्षा, आय और रोजगार के संदर्भ में इसका लाभ नागरिकों के बीच समान रूप से होता है?

भारत में, शीर्ष 10 प्रतिशत आबादी के पास आय का 57.1 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि निचले 50 प्रतिशत के पास सिर्फ 13.1 प्रतिशत हिस्सा है। व्यवहार में, यदि कोई घर में प्रति वयस्क प्रति माह 60,000 रुपये कमाता है, तो वह आय के मामले में आबादी के शीर्ष 10 प्रतिशत में आ जाता है।

भारत की आय का असमान वितरण कई कारणों से है जैसे शिक्षा पर अपर्याप्त सामाजिक खर्च, श्रम शक्ति में महिलाओं की कम भागीदारी, और रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए सेवा और औद्योगिक क्षेत्रों की अक्षमता।

इसमें एक बड़ा योगदान उन लाखों भारतीयों के लिए अवसर की कमी है जो शिक्षित हैं लेकिन औपचारिक अर्थव्यवस्था में शामिल नहीं हैं। स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया 2019 की रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि नौकरी की तलाश में शिक्षित नागरिकों की संख्या बेंगलुरु की पूरी आबादी के बराबर थी। जून 2022 में, लोकसभा के कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) ने खुलासा किया कि पिछले आठ वर्षों में, 22 करोड़ से अधिक आवेदकों में से केवल 7.22 लाख उम्मीदवारों को केंद्र सरकार की स्थायी नौकरियां मिलीं। इसका मतलब है कि प्रत्येक नौकरी के लिए 300 से अधिक आवेदक थे।

भारत में बढ़ती आय असमानता के पीछे बुनियादी कारण है प्रासंगिक शिक्षा और अवसर की कमी। इसलिए हमें जिस समस्या का समाधान करने की आवश्यकता है वह यह है कि देश कैसे अधिक समान रूप से विकसित हो सकता है और अवसरों की कमी दूर हो सकती है?

भारत में औपचारिक रोजगार के लिए प्राथमिक आवश्यकता एक निश्चित स्तर की शिक्षा है। वर्तमान शैक्षणिक प्रणाली एक अत्यंत चयनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें केवल कुछ ही उस स्तर तक पहुंच पाते हैं जहां 'पेशेवर' तैयार होते हैं, जैसे – इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, चार्टर्ड

अकाउंटेंट, इत्यादि। हमारे अधिकांश युवाओं के लिए, देश की शिक्षा प्रणाली रोजगार के अवसर में तब्दील नहीं होती है। भारत में लगभग 47 प्रतिशत स्नातक डिग्री पाए युवा उद्योग में भूमिका निभाने के लिए पात्र नहीं हैं। ग्लोबल स्किल गैप रिपोर्ट के मुताबिक, 92 फीसदी भारतीय कर्मचारियों का मानना है कि देश में स्किल गैप है।

इसका मतलब यह हुआ कि उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए हमारे सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को बढ़ाने के प्रयास (जो वर्तमान में 18-23 वर्ष के आयु वर्ग के लिए 27.3 प्रतिशत है) दिशाहीन हो सकता है, क्योंकि आर्थिक दृष्टिकोण से इसका बहुत कम मोल है।

विकल्प क्या है ?

उच्च सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) और स्नातक डिग्री के आर्थिक महत्व को समझने के लिए, हमने भारत की नामांकन दर और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की आय की तुलना दूसरे देश से की। उदाहरण के लिए, स्विट्जरलैंड में 2020 में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) आय 85,000 अमेरिकी डॉलर रही, जबकि केवल 44 प्रतिशत आबादी के पास कॉलेज की डिग्री थी। बाकी लोग माध्यमिक स्तर पर अपनी शिक्षा रोक देते हैं, जिस बिंदु पर बहुमत व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और कार्यबल का हिस्सा बन जाते हैं। इसकी तुलना में, भारत की सकल घरेलू उत्पाद प्रति व्यक्ति आय लगभग 2,000 अमेरिकी डॉलर है।

हमारे लिए अन्य देशों से सीखने के लिए बहुत कुछ है जो 1970 और 80 के दशक में हमारी जैसी ही स्थिति में थे। ऑस्ट्रिया, चीन, जर्मनी, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, स्विट्जरलैंड और अन्य, जो लगभग 30-50 साल पहले प्रति व्यक्ति आय स्तर लगभग 2,000 अमेरिकी डॉलर पर थे, सभी ने रोजगार से जुड़ी शिक्षा जैसे कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण,तथा एपरेंटीशिप में भारी निवेश किया।

हमारे लिए अन्य देशों से सीखने के लिए बहुत कुछ है जो 1970 और 80 के दशक में हमारी जैसी ही स्थिति में थे। ऑस्ट्रिया, चीन, जर्मनी, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, स्विट्जरलैंड और अन्य, जो लगभग 30-50 साल पहले प्रति व्यक्ति आय स्तर लगभग 2,000 अमेरिकी डॉलर पर थे, सभी ने रोजगार से जुड़ी शिक्षा जैसे कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण,तथा एपरेंटीशिप में भारी निवेश किया।

भारत में, रोजगार के अंतर को पाटने के लिए कौशल निर्माण के हिस्से के रूप में व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया गया है। हालाँकि, आंकड़ों से पता चलता है कि ये प्रयास सफल नहीं रहे हैं। आँकड़े बताते हैं कि 12-59 वर्ष के आयु वर्ग के 84 प्रतिशत से अधिक छात्रों को 2020-21 के दौरान कोई व्यावसायिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। महिलाओं के मामले में यह संख्या चौंका देने वाली 90 प्रतिशत थी। 15,000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), जो पारंपरिक रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण की रीढ़ के रूप में काम करते हैं, भी उपलब्ध 25 लाख में से केवल 10.5 लाख सीटों के साथ कम उपयोग में हैं। इसके अलावा, उनकी उद्योग प्रासंगिकता की कमी भी आंकड़ों में परिलक्षित होती है, जो दर्शाता है कि 2020 में केवल 3 प्रतिशत आईटीआई उम्मीदवारों को काम मिल सका।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का लक्ष्य व्यावसायिक प्रशिक्षण में निवेश करना है, छात्रों की कल्पना और विकास पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अधिकांश छात्रों को शैक्षणिक और काम मिलने के अवसरों की जानकारी ही नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप वे वह डिग्री लेते हैं जिसका कोई आर्थिक मूल्य नहीं।

शिक्षा और रोजगार के बीच कमजोर संबंध को देखते हुए, यह सवाल उठाने लायक है कि क्या उच्च सकल नामांकन अनुपात जीईआर बढ़ाना देश के लिए सही लक्ष्य है ?

हालाँकि यह सिर्फ रोजगार के बारे में नहीं है।

शिक्षा का सिर्फ आर्थिक प्रभाव नहीं पड़ता। इसका वास्तविक मूल्य वह पहचान और सामाजिक मुद्रा है जो यह हमारे समाज के अधिक हाशिए पर रहने वाले वर्गों को प्रदान करता है। औपचारिक डिग्री प्राप्त करना मूल्यवान है, विशेष रूप से लड़कियों, दलित, बहुजन और आदिवासी (डीबीए) समुदायों और अल्पसंख्यकों के लिए। विशेष रूप से महिलाओं के लिए, यह विवाह और मातृत्व की उम्र

में देरी करता है, जिससे बाल मृत्यु दर और समाज में असमानता में कमी आती है। इसी तरह, हाशिए पर मौजूद जातियों और वर्गों के लोगों के बीच उच्च जीईआर का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

यह बताता है कि गरीब या कमजोर समुदाय बीए या एमए की डिग्री हासिल करने का प्रयास क्यों करेंगे – भले ही यह उन्हें नौकरी नहीं देता है, लेकिन यह उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करता है। यह हमें बताता है कि सम्मानित होना और सामाजिक पदानुक्रम में आगे बढ़ना हमारी आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए आर्थिक अवसरों से अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

हमारे युवाओं का भविष्य दांव पर है

भारत के पास उसकी अवसर खिड़की बंद होने में अभी 18 साल बाकी हैं। 2041 तक, हम कामकाजी उम्र के चरम पर पहुंच जाएंगे – कामकाजी उम्र की आबादी (20–59 वर्ष) की हिस्सेदारी 59 प्रतिशत तक पहुंचने की उम्मीद है। इसके बाद संख्या में गिरावट आनी शुरू हो जायेगी हमारे पास एक वृद्ध आबादी होगी जिसे मदद की आवश्यकता होगी। इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि हमारा भविष्य का विकास बेरोजगारी वाला न हो और हमारी शिक्षा युवाओं के लिए अवसर पैदा करने में सक्षम हो, न कि उन्हें बाधित करने में।

हम आर्थिक विकास को अधिक व्यापक बनाने और इस जनसांख्यिकीय के बहुमत को लाभ पहुंचाने का समाधान कैसे कर सकते हैं, साथ ही यह भी सुनिश्चित कैसे कर सकते हैं कि यह सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ चले?

हमें स्कूल–टू–वर्क बदलावों में गंभीरता से निवेश करने की ज़रूरत है। हमें एक मजबूत पाठ्यक्रम विकसित करना होगा जो काम के भविष्य पर केंद्रित हो। हमें प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों को नियुक्त करने और प्रशिक्षित करने, बजट आवंटित करने और इंटर्नशिप और प्रशिक्षुता प्रदान करने की आवश्यकता है।

हमें कार्य–कौशल प्रशिक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए

हमने उच्च शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से सम्मान दिया है और उसकी शिक्षा में महत्वपूर्ण निवेश किया है। प्रोफेशनल डिग्री प्राप्त करना अंतिम सफलता का प्रतीक माना जाता है। लेकिन यह हमारे उन अधिकांश युवाओं की कीमत पर नहीं हो सकता जो माध्यमिक शिक्षा में हैं और उन्हें इसमें कोई मौका नहीं मिलेगा।

सरकार का मुख्य फोकस प्राथमिक शिक्षा को सही करने पर होता है। वास्तव में, विकास क्षेत्र में भी, हममें से अधिकांश लोग अब भी यह सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं कि सभी बच्चों में आवश्यक मूलभूत और प्राथमिक कौशल विकसित हों। परिणामस्वरूप, माध्यमिक शिक्षा पर बहुत कम या कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। दुर्भाग्य से, यह देखते हुए कि कामकाजी आबादी के अवसर का दोहन करने के लिए हमारे पास केवल दो दशक बचे हैं, हमारे पास पहले प्राथमिक करने और फिर माध्यमिक करने की सुविधा नहीं है। इसे एक साथ घटित होने की आवश्यकता है। और इसे अभी घटित होने की आवश्यकता है।

यदि हम गंभीरता से व्यावसायिक शिक्षा का पता लगाने जा रहे हैं जैसा कि अन्य देशों ने हमसे पहले सफलतापूर्वक किया है, तो हमारे सामने एक बड़ा सवाल यह होगा कि कोई व्यावसायिक विषयों का मूल्यांकन और ग्रेड कैसे देता है? चूँकि हम नहीं जानते कि यह कैसे करना है, हम विषय का परिचय देने में असमर्थ हैं, जिसका अर्थ है कि हमारे पास ऐसा विकल्प नहीं है जिसे छात्र चुन सकें। ग्रेड के अभाव में, कॉलेज आपको प्रवेश नहीं देंगे क्योंकि मूल्यांकन का कोई वैकल्पिक तरीका नहीं है। इसलिए, इसे केवल एक पाठ्येतर विषय के रूप में देखा जाता है, न कि 'मुख्य' विषयों के बराबर।

हमें स्कूल–टू–वर्क बदलावों में गंभीरता से निवेश करने की ज़रूरत है। हमें एक मजबूत पाठ्यक्रम विकसित करना होगा जो काम के भविष्य पर केंद्रित हो। हमें प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों को नियुक्त करने और प्रशिक्षित करने, बजट आवंटित करने और इंटर्नशिप और प्रशिक्षुता प्रदान करने की आवश्यकता है। हमें बाजार संपर्क और रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने की भी जरूरत है। इसके बिना, हम आगे नहीं बढ़ पाएंगे और अगले दो दशकों को अपने युवाओं के लिए महत्वपूर्ण नहीं बना पाएंगे। ❑

आदित्य नटराज पीरामल फाउंडेशन के सीईओ हैं, मेकिन माहेश्वरी उद्यम लर्निंग फाउंडेशन के संस्थापक और सीईओ हैं, प्रिया अग्रवाल अंतरंग फाउंडेशन की संस्थापक निदेशक हैं।

एक शिक्षक की चिंता

❑



❑

अविजित पाठक

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान संकाय में प्रोफेसर रहे अविजित पाठक का यह मार्मिक लेख है। एक शिक्षक के रूप में वे जो चिंता व्यक्त कर रहे हैं वह हमारे समय की त्रासदी है। ❑ सं.

तीस वर्षों से अधिक के अपने शिक्षण कार्य को मैंने हमेशा उत्सव की तरह लिया। मेरे लिए क्लासरूम शिक्षण, दो तरफा मुखर संवाद रहा है । वह एक ऐसी जगह रही जो बातचीत करने, देखने परखने के भिन्न तरीकों व सुनने की कला के साथ मानसिक-बौद्धिक क्षितिज को अनंत विस्तार देने वाली थी।

मेरे विद्यार्थी अक्सर मुझसे असहमत होते थे और अपने तरीके से मेरी वैचारिक जमीन की व्याख्या भी करते थे। कुछ मार्क्सवादी विद्यार्थियों को मैं गांधीवादी लगता था। आंबेडकरवादी विद्यार्थियों को मैं जातीय सुविधा प्राप्त (कास्ट प्रिविलेज्ड) लगता था। वे सोचते थे कि मैं भारतीय राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में जातिगत औचित्य की गंभीरता को समझ नहीं सका। इतना ही नहीं, कुछ विद्यार्थियों की दृष्टि में मैं नव वामपंथ की विचारधारा वाला था क्योंकि मैं थीयोडोर एडॉर्नो, हरबर्ट मार्क्यूज और एरिक फॉर्म को अपने व्याख्यानों में उद्धृत करता था। इन सब मतभेदों और असहमतियों के बावजूद, फिर भी, हमारे बीच शत्रुतापूर्ण/कटुतापूर्ण संबंध कभी नहीं थे।

क्लास के बाद हम जेएनयू विश्वविद्यालय के जलपान गृह में साथ बैठकर कॉफी पी सकते थे। न पुलिस में कोई शिकायत, न प्राथमिकी दर्ज, न कोई वीडियो वायरल। दूसरे शब्दों में शिक्षक और छात्र के बीचरिश्तों की पवित्रता बनी हुई थी, परस्पर विश्वास बचा हुआ था। हमारा क्लासरूम कैमरे की निगरानी में नहीं था। इस मामले में मैं संभवतः किस्मत वाला था। मैं उचित समय पर सेवानिवृत हो गया।

अब हम एकदम अलग समय में रह रहे हैं। कोई विद्यार्थी, क्लासरूम के विचार-विमर्श का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर सकता है।

एक ऐसे समय में जब धार्मिक या राष्ट्रवादी भावना तुरंत आहत होती हो, किसी शिक्षक के विचारों को आसानी से अपराध की श्रेणी में रखकर दर्ज की गई प्राथमिक रिपोर्ट के आधार पर उसे गिरफ्तार किया जा सकता है। पुणे के सिम्बायोसिस कॉलेज ऑफ़ आर्ट एंड कॉमर्स के एक शिक्षक के साथ यही हुआ है।

हिंदी के प्राध्यापक अशोक सोपन हिंदू, इस्लाम और ईसाइयत आदि धर्मों की सामान्य एकता (ईश्वर एक है) को 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को समझा रहे थे। किसी छात्र ने उनके व्याख्यान का वीडियो बनाकर उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया।

हिंदुत्ववादी संगठन के किसी सदस्य ने बिना एक पल गंवाए प्राथमिकी दर्ज करवा दी और पुणे पुलिसने उसी तत्परता से अशोक सोपन के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 295ए यानी जानबूझकर गलत इरादे से धार्मिक भावनाओं को भड़काने का कृत्य के अंतर्गत मामला दर्ज कर उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया। कॉलेज प्रशासन ने उन्हें तत्काल प्रभाव से इस आधार पर निलंबित कर दिया कि उन्होंने कक्षा में हिंदू देवी-देवताओं के बारे में आपत्तिजनक बातें कही हैं।

एक शिक्षक के रूप में यह घटना मुझे सावधान करती है। इस तरह की घटना हमें दिखाती है कि हम किस तरह से प्रश्न, प्रतिप्रश्न, संवाद, बातचीत और मत-मतांतर के द्वारा सीखने की भावना पर कुठाराघात कर रहे हैं। हम उस पारस्परिक विश्वास की हत्या कर रहे हैं जो क्लासरूम टीचिंग की जान होता है। हम विद्यार्थी होने की भावना को ही खत्म कर रहे हैं।

सिम्बायोसिस कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स की बारहवीं कक्षा के उन विद्यार्थियों की कल्पना कीजिए। इन युवाओं ने दुनिया में अपनी आंखें अभी खोली ही हैं। उम्र की इस दहलीज पर उन्हें जिज्ञासु, जागृत विवेकी, उपयोगी पुस्तकों का अध्ययनकर्ता, जाति और धर्म की पहचान से परे देखने, समझने की क्षमता रखने वाला, अपने विचारों के क्षितिज का विस्तारक, जीवन, संस्कृति और समाज को अनेकानेक दृष्टि से समझने, देखने-परखने वाला होना चाहिए था। विद्यार्थी होने का भी अपना अर्थसौंदर्य होता है।

अगर टीवी चैनलों की चमकीली, नशीली धुंध में उनके एंकर्स ही हमारे शिक्षक बन जाएं और सोशल मीडिया दिन-रात हमारे जागृत आलोचनात्मक विवेक को कुंठित करे, महान विचारों को क्षुद्र प्रचारकों की चखचख ऊंची आवाज में पदावनत करने लगे और सारहीन नारेबाजी, कविता दर्शन और सामाजिक विज्ञान को अपदस्थ करने लगे तब छात्र होने की भावना (स्पिरिट ऑफ स्टूडेंटशिप) को बचाए रखना लोहे के चने चबाना है।

दूसरे शब्दों में उन्हें प्रतिक्रियात्मक जिज्ञासु, कल्पनाप्रवण तथा बहुलवादी असहमतिपूर्ण विश्वदृष्टि के सम्मान की योग्यता रखने वाला होना चाहिए। लेकिन क्या करें? अगर टीवी चैनलों की चमकीली, नशीली धुंध में उनके एंकर्स ही हमारे शिक्षक बन जाएं और सोशल मीडिया दिन-रात हमारे जागृत आलोचनात्मक विवेक को कुंठित करे, महान विचारों को क्षुद्र प्रचारकों की चखचख ऊंची आवाज में पदावनत करने लगे और सारहीन नारेबाजी, कविता दर्शन और सामाजिक विज्ञान को अपदस्थ करने लगे तब छात्र होने की भावना (स्पिरिट ऑफ स्टूडेंटशिप) को बचाए रखना लोहे के चने चबाना है।

आज हम अपने विद्यार्थियों को विचारहीन भीड़ में बदल रहे हैं।

कहने की जरूरत नहीं कि उन्मादी धार्मिक पहचान से प्रेरित उग्र राष्ट्रवाद जब विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में दाखिल हो जाता है तब वहां हर चीज बदलती है। शिक्षक, प्राचार्य और कुलपति वर्चस्वशाली राष्ट्रवाद के विमर्शकार और संरक्षक बन जाते हैं। आम शिक्षकों से भी एक-आयामी राज्यसत्तावादी बनने की आशा की जाती है। तब वहां आलोचनात्मक शिक्षा-तंत्र अनुपस्थित रहता है। भय, संदेह, निगरानी यानी सर्विलांस का वातावरण बनता है। ऐसे माहौल में क्लासरूम टीचिंग को तो समाप्त होना ही है। इसके साथ ही शिक्षक और छात्र का सौहार्दपूर्ण संबंध अतीत की वस्तु बन जाता है।

कल्पना कीजिए एक शिक्षक के रूप में आप अपने विद्यार्थियों को फ्रेडरिक नीत्शे की घोषणा ईश्वर मर गया का अर्थ समझा रहे हैं।

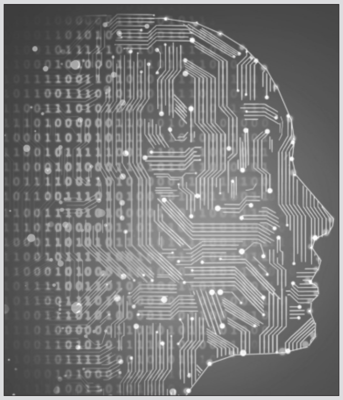
कल्पना कीजिए आप अपने विद्यार्थियों को कबीर का पद पढ़ा रहे हैं मोको कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में, ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकांत निवास में, ना मंदिर में ना मस्जिद में ना काबे कैलाश में, ना मैं किरिया करम में रहता, ना ही जोग सन्यास में।

कल्पना करें कि आप अपने विद्यार्थियों को सन् 1947-48 में गांधी जी की प्रार्थना सभा के भजन का महत्व समझा रहे हैं और आप ईश्वर अल्लाह तेरे नाम गा रहे हैं।

कौन जानता है कि आप के खिलाफ थाने में प्रथम सूचना रिपोर्ट कब दर्ज हो जाए और आपका नियोक्ता आपको नौकरी से निलंबित कर दे या तत्काल बाहर कर दे ❑

यह आलेख इंडियन एक्सप्रेस से साभार। भावानुवाद के लिए रवि श्रीवास्तव का आभार।

एआई या मशीन बुद्धि से मानव व्यवहार नियंत्रित किये जाने के खतरे



❑

बी.आर. प्रसाद

नई डिजीटल तकनीक के उन्नयन पर गहरी नजर रखने वाले अध्येता बी.आर.प्रसाद का आलेख हमें सतर्क करता है। ❑सं.

❑

इस डिजिटल युग में लोगों के व्यवहार के प्रबंधन के लिए एल्गोरिद्म का उपयोग किया जा रहा है। 'एआई' याने कृत्रिम बुद्धि या मशीन की बुद्धि के तेजी से उभर रहे वर्चस्व के चलते यह सवाल स्वाभाविक ही उठाया जा रहा है कि क्या हम मशीनों का इस्तेमाल कर रहे हैं या मशीनें भी हमारा इस्तेमाल कर रही हैं?

नई यंत्र तकनीक के अध्येता कहते हैं कि यह दोनों तरफ होता है। हम मशीन का उपयोग करते हैं और मशीन भी हमारा उपयोग करती है। इसे समझने की जरूरत है कि मशीन हमारा उपयोग कैसे करती है?

जब हम यह कहते हैं कि मशीनें या एआई हमारा इस्तेमाल करती है, तो उसका अर्थ यह होता है कि मशीनी बुद्धि को बनाने वाले लोग उसके जरिए हमारा इस्तेमाल करते हैं। वे ए आई या मशीनी बुद्धि के जरिए हमारे व्यवहार पर नजर रखते हैं और मनोवैज्ञानिक तरीकों से उसे संचालित करते हैं। जैसे हम क्या खरीदते हैं, हम छुट्टियों मनाने कहां जाते हैं, हमारी रुचियां क्या है, हम क्या पढ़ते हैं, हमारी खर्च करने की आदत कैसी है और यहां तक कि हमारे आस्था और राजनीति के विचार क्या है और हम किस पार्टी को वोट दे सकते हैं?

इसलिए दुनिया की सबसे बड़ी डिजिटल उद्योग की कंपनियां एआई को अधिक से अधिक परिष्कृत करने के लिये भारी निवेश कर रही हैं। वे भविष्य को अपने कब्जे में कर लेना चाहती हैं क्योंकि एआई के जरिए हम पर निगाह रखी जा सकती है। एआई की अब तक की प्रगति के बाद एआई बनाने वाली कंपनियां हमारे बारे में इतना जान लेती है जितना शायद हम भी अपने बारे में नहीं जानते।

यह सवाल सहज ही पूछा जा सकता है कि दूसरे क्यों हमारे बारे में इतना जानना चाहते है?यह व्यावसाय है। हमारी जानकारियों को एकत्र करना और उन्हें आगे बेचना बड़ा व्यवसाय बन रहा है। यह सब हमारे ऑन लाइन गतिविधियों को मशीनी बुद्धि के जरिए होता है।

सहज ही यह पूछा जा सकता है कि ऐसा कैसे हो सकता है? इसका क्या सबूत है? इसका सबसे बड़ा सबूत यह जानने से मिल जाएगा कि यह ट्रिलियन डॉलर का सोशल मीडिया या तकनीकी उद्योग कैसे कमाता है? वैसे तो सोशल मीडिया मुफ़्त है। किसी को भी गूगल से कुछ खोजने के लिए या फ़ेसबुक अथवा इंस्टाग्राम या व्हाट्सएप्प पर अपना खाता बनाने के लिए कोई

चिकित्सा पेशे की नैतिकता बढ़ाने के लिए नये नियम

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) ने चिकित्सा चिकित्सकों के नैतिक आचरण को बढ़ाने के लिए कड़े नियम बनाए हैं। 'पंजीकृत मेडिकल चिकित्सकों के व्यावसायिक आचरण से संबंधित विनियम' में ये नये नियम जोड़े जाने की घोषणा की गई है। इन नियमों का उद्देश्य देश में चिकित्सा परिदृश्य को नया आयाम देना और चिकित्सा व्यवस्था में पारदर्शिता को बढ़ावा देना है। आयोग का यह कदम चिकित्सा पेशे की अखंडता, पारदर्शिता और जवाबदेही की संस्कृति को बढ़ावा देकर नैतिक चिकित्सा अभ्यास और रोगी कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

नए दिशानिर्देशों का मुख्य जोर डॉक्टरों और उनके परिवारों को फार्मास्युटिकल कंपनियों, चिकित्सा उपकरण फर्मों और स्वास्थ्य देखभाल के वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों से उपहार, यात्रा भत्ते, आतिथ्य, नकदी या किसी भी प्रकार के मनोरंजन को स्वीकार करने से रोकना है। इस कदम का उद्देश्य हितों के संभावित टकराव को खत्म करना भी है जिससे रोगी की देखभाल से समझौता कर सकता है।

चिकित्सा सलाह और उपचार के महत्व पर जोर देते हुए इस नैतिक फोकस के अनुसार डॉक्टरों को दवा ब्रांडों, दवाओं और उपकरणों का समर्थन करने या उनके किसी भी प्रकार के विज्ञापन में शामिल होने को भी प्रतिबंधित किया गया है।

नियमों में व्यवस्था की गई है कि यदि मरीज़ या उनके अधिकृत परिचारक अस्पताल के मरीज़ों के रिकॉर्ड को मांगे तो उनके अनुरोध को तुरंत स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके अलावा, इन दस्तावेजों मुहैया करने के प्रावधान में भी काफी सुधार किया गया है। इआसके लिए पहले के 72 दिनों की बजाय पांच कार्य दिवसों की संशोधित समय सीमा निर्धारित की गई है।

यह नियम रोगी देखभाल के लिए सटीक चिकित्सा रिकॉर्ड बनाए रखने के महत्व को भी ध्यान दिया गया है। मेडिकल डाक्टरों को डेटा सुरक्षा और गोपनीयता कानूनों का पालन करते हुए तीन साल के भीतर मरीज के रिकॉर्ड को डिजिटल बनाना होगा। ये डिजीटल रिकॉर्ड त्वरित गति से उन्हें निकालने सुरक्षित रखने दोनों को बढ़ाने के लिए तैयार किए गए हैं।

इन नियमों में डॉक्टरों को अपमानजनक या हिंसक रोगी व्यवहार के मामलों में इलाज से इंकार करने का अधिकार दिया गया है तथा इमरजेंसी की परिभाषा को विशेष रूप से स्पष्ट किया गया है। ❑

भुगतान नहीं करना पड़ता – सब कुछ अभूतपूर्व रूप से निःशुल्क है। लेकिन कभी किसी ने सोचा है कि इतिहास में पहली बार ऐसा कैसे हो रहा है कि मुफ़्त दी जाने वाली सेवाओं को उपलब्ध कराने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों के मालिक दुनिया के सबसे अमीर लोगों में शामिल हैं, और वे लोग इसी काम से मुनाफा कमा रहे हैं। बहुतों को यह बहुत अजीब लग सकता है। ऐसा कैसे हो सकता हैं कि ये लोग यह सारी चीजें मुफ्त में देते हैं और फिर भी वे दुनिया के सबसे अमीर बन जाते हैं। जाहिर है वे किसी और तरह से पैसा कमाते हैं। वे अपने नए औजार एआई से हमारे व्यवहार को समझकर हमें प्रभावित करने की क्षमता हासिल करके पैसा कमा रहे हैं। वे हमारी मनोवैज्ञानिक दुनिया की जानकारी हासिल करते हैं जिसे वे उन ताकतों को बेचते हैं जो हमारे व्यवहार को नियंत्रित करके अपना लाभ कमाना चाहती हैं। इनमें उद्योग व कारोबार की ताकतें, राजनैतिक दल और राज्य सभी शामिल हैं जिनके लिए हमें नियंत्रित करना जरूरी है। एआई का उपयोग केवल अमुक ब्रांड के टूथपेस्ट और जूते बेचने के लिए ही नहीं किया जाता बल्कि इसका उपयोग हमारी सोच को प्रबंधित करने के लिए भी किया जाने का उद्यम हो रहा है। और ऐसा संभव है। यह परेशानी पैदा करने वाली बात है। यह प्रबंधन हिंसा और दंगे भी भड़का सकता है। वे यह पता लगा सकते हैं कि इसमें शामिल होने वाले संभावित लोग कौन हो सकते हैं और उन्हें भड़का सकते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि एआई आधारित जन लामबंदी और जन समस्या का मुद्दा भी बहुत बड़ा है। ❑

प्रतिरोध की कविताएं



गोरख पाण्डेय
(1945 -1989)

समझदारों का गीत

हवा का रुख कैसा है, हम समझते हैं
हम उसे पीठ क्यों दे देते हैं, हम समझते हैं
हम समझते हैं ख़ून का मतलब
पैसे की कीमत हम समझते हैं
क्या है पक्ष में विपक्ष में क्या है, हम समझते हैं
हम इतना समझते हैं
कि समझने से डरते हैं और चुप रहते हैं।

चुप्पी का मतलब भी हम समझते हैं
बोलते हैं तो सोच-समझकर बोलते हैं
बोलने की आजादी का
मतलब समझते हैं
टुटपुंजिया नौकरी के लिए
आज़ादी बेचने का मतलब हम समझते हैं
मगर हम क्या कर सकते हैं
अगर बेरोज़गारी अन्याय से
तेज़ दर से बढ़ रही है
हम आज़ादी और बेरोज़गारी दोनों के
ख़तरे समझते हैं
हम ख़तरों से बाल-बाल बच जाते हैं
हम समझते हैं
हम क्यों बच जाते हैं, यह भी हम समझते हैं।

हम ईश्वर से दुखी रहते हैं अगर
वह सिर्फ़ कल्पना नहीं है
हम सरकार से दुखी रहते हैं कि
वह समझती क्यों नहीं
हम जनता से दुखी रहते हैं क्योंकि
वह भेड़ियाधसान होती है।
हम सारी दुनिया के दुख से दुखी रहते हैं
हम समझते हैं
मगर हम कितना दुखी रहते हैं
यह भी हम समझते हैं
यहां विरोध ही वाजिब क़दम है
हम समझते हैं
हम क़दम-क़दम पर समझौते करते हैं
हम समझते हैं
हम समझौते के लिए तर्क गढ़ते हैं
हर तर्क गोल-मटोल भाषा में
पेश करते हैं, हम समझते हैं
हम इस गोल-मटोल भाषा का तर्क भी
समझते हैं।

वैसे हम अपने को

किसी से कम नहीं समझते हैं
हर स्याह को सफेद
और सफ़ेद को स्याह कर सकते हैं
हम चाय की प्यालियों में तूफ़ान खड़ा कर सकते हैं
करने को तो हम क्रांति भी कर सकते हैं
अगर सरकार कमज़ोर हो और जनता समझदार
लेकिन हम समझते हैं
कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं
हम क्यों कुछ नहीं कर सकते
यह भी हम समझते हैं। ❑

हे भले आदमियो !

डबाडबा गई है तारों-भरी
शरद से पहले की यह
अँधेरी नम
रात ।
उतर रही है नींद
सपनों के पंख फैलाए
छोटे-मोटे हज़ार दुखों से
जर्जर पंख फैलाए
उतर रही है नींद
हत्यारों के भी सिरहाने ।
हे भले आदमियो !
कब जागोगे
और हथियारों को
बेमतलब बना दोगे ?
हे भले आदमियो !
सपने भी सुखी और
आज़ाद होना चाहते हैं । ❑

समय का पहिया

समय का पहिया चले रे साथी
समय का पहिया चले
फ़ौलादी घोंड़ों की गति से
आग बरफ़ में जले रे साथी
समय का पहिया चले
रात और दिन पल पल छिन
आगे बढ़ता जाय
तोड़ पुराना नये सिरे से
सब कुछ गढ़ता जाय
पर्वत पर्वत धारा फूटे लोहा मोम सा गले रे साथी
समय का पहिया चले
उठा आदमी जब जंगल से
अपना सीना ताने
रफ़्तारों को मुट्ठी में कर
पहिया लगा घुमाने
मेहनत के हाथों से
आज़ादी की सड़के ढले रे साथी
समय का पहिया चले ❑

फूल

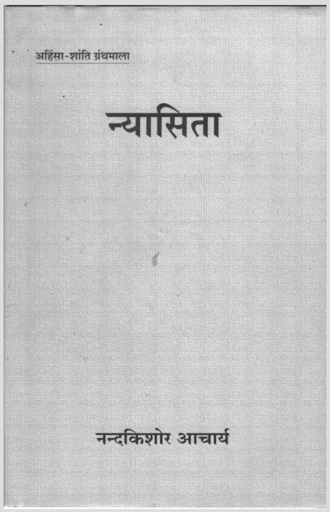
फूल हैं गोया मिट्टी के दिल हैं
धड़कते हुए
बादलों के ग़लीचों पे रंगीन बच्चे
मचलते हुए
प्यार के काँपते होंठ हैं
मौत पर खिलखिलाती हुई चम्पई

ज़िन्दगी
जो कभी मात खाए नहीं
और ख़ुशबू हैं
जिसको कोई बाँध पाए नहीं

ख़ूबसूरत हैं इतने
कि बरबस ही जीने की इच्छा जगा दें
कि दुनिया को और जीने लायक बनाने की
इच्छा जगा दें।❑

न्यायसिता : महात्मा गांधी की अर्थशास्त्रीय अवधारणा

❑



❑

राजेन्द्र बोड़ा

चिंतक नन्दकिशोर आचार्य उन विरले लेखकों में से हैं जो गहन तथा गूढ अकादमिक विषयों की विवेचना सरल और सहज शब्दों में कर सकते हैं। यह उन्होंने बार–बार साबित किया है। वे अंग्रेजी के अकादमिक शब्दों का सनातन परंपरा के ऐसे शब्दों में अनुवाद कर देते हैं जो रूढ़ि वाले नहीं होते, आधुनिक होते है। उनकी यह मेधा उनके वैचारिक व शैक्षणिक लेखों में ही नहीं उनकी कविताओं में भी दमकती है। प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर द्वारा सद्य प्रकाशित उनकी नई पुस्तक 'न्यायसिता' उनकी इसी मेधा का हमें परिचय देती है।

आचार्य जी ने महात्मा गांधी की 'ट्रस्टीशिप' की अवधारणा को 'न्यायसिता' नाम दिया है। न्यायसिता महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत मूलतः ऐसी अर्थशास्त्रीय अवधारणा है, जिसकी व्याप्ति समग्र जीवन को अपनी परिधि में ले लेती है। इस पुस्तक में इस अवधारणा की दार्शनिक और अर्थशास्त्रीय तत्त्व–मीमांसाओं पर विस्तार से विवेचन ही नहीं किया गया है वरन् उनकी व्यावहारिकता को भी परखा गया है।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय में अतिथि लेखक तथा आईआईटी हैदराबाद में प्रोफेसर ऑफ एमीनेंस रहे आचार्य ने प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर में उनकी अहिंसा–शांति ग्रंथमाला का सम्पादन हाल ही में पूरा किया है। इसमें उनके नेतृत्व में करीब एक सौ पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है।

ग्रंथमाला में उन्होंने गांधी विचार और अहिंसा पर अद्भुत ग्रंथ तैयार करवाए, लिखवाए, और संपादित किए है। इस ग्रंथ माला का उनका अपना लिखा 'न्यायसिता' एक ऐसा पुष्प है जो वैचारिक जगत में निश्चित रूप से अपना विशिष्ठ स्थान बनाएगा। प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, के संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक डी. आर. मेहता इस पुस्तक में अपने प्रकाशकीय वक्तव्य में उचित ही कहते हैं कि आचार्यजी ने न्यायसिता के अर्थशास्त्रीय आधारों तथा आयामों के साथ उसके तत्त्वमीमांसीय आधारों का भी सम्यक विश्लेषण करते हुए उसकी व्यावहारिकता के सवाल पर भी विचार किया है।

न्यायसिता पद का प्रयोग सामान्यतः 'ट्रस्टीशिप' के हिन्दी अनुवाद के रूप में होता है और उसे महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित एक अर्थशास्त्रीय अवधारणा समझा जाता है। लेकिन 'न्यायसिता' के तात्त्विक



आधार पर आचार्य जी का मानना है कि वह केवल अर्थशास्त्रीय अवधारणा न रह कर एक समग्र जीवन दृष्टि हो जाती है। वे न्यायसिता की अवधारणा के पीछे आध्यात्मिक मुक्ति वाली सनातन भारतीय जीवन दर्शन की पृष्ठभूमि देखते हैं। वे महात्मा गांधी को उद्धृत करते हैं: शुद्ध जीवन जीने वाले व्यक्ति का हर काम यज्ञ स्वरूप होना चाहिए क्योंकि यज्ञ हमारे जन्म के साथ ही आता है; हम आजीवन ऋणी हैं और इसलिए विश्व की सेवा करने के लिए कर्तव्ययबद्ध है।

पुस्तक में स्थापित किया गया है कि महात्मा गांधी की 'न्यायसिता' अथवा ट्रस्टीशिप की अवधारणा एक ऐसी शोषण रहित समतामूलक व्यवस्था बनाने प्रस्ताव है। साथ ही यह भी कहा गया है कि स्वामित्व को 'न्यायसिता' में रूपांतरित करने के महात्मा गांधी के आग्रह की पृष्ठभूमि में न्याय और प्रेम के आग्रह की प्रेरक सक्रियता समझी जा सकती है। गांधी का नैतिक को ही आध्यात्मिक मानना, जीवन के दैनंदिन क्रियाकलाप मे उसको अभिव्यक्त करना है इस प्रकार, वह आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

आचार्य जी का मानना है कि न्यायसिता का सिद्धांत। दरअसल, इस ऐतिहासिक साक्ष्य पर आधारित है कि किसी भी प्रकार का उत्पादन केवल वैयक्तिक संसाधनों और कौशल के आधार पर नहीं किया जा सकता, इसलिए उससे मिलने वाले लाभों पर भी किसी एक व्यक्ति, घरानों या सीमित व्यक्ति-समूहों, निगमों का अधिकार अर्थशास्त्रीय आधार पर भी मान्य नहीं हो सकता। वे कहते हैं कि महात्मा गांधी का 'न्यायसिता' का विकल्प विकेंद्रीकृत स्वामित्व का व्यावहारिक सुझाव है। तात्पर्य यह कि मानव जाति को स्वयं को सम्पूर्ण प्राकृतिक संपदा का, इन पृथ्वी का, स्वामी नहीं, बल्कि ऐसा न्यासी समझना चाहिए, जो अपने भरण-पोषण के लिए आवश्यक साधन प्रदान करने वाली प्रकृति के प्रति कृतज्ञता महसोसस करते हुए उसके संरक्षण के लिए स्वयं को उत्तरदायी समझे। यह एक प्रकार का आर्थिक समझौता ही है, जिसके अनुसार मनुष्य को प्रकृति की सेवा के बदले अपने भरण-पोषण के रूप में मानदेय प्राप्त होना है।

लेखक का प्रमुख अर्थशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों का गहन अध्ययन स्पष्ट है और यह भी कि वह एरिक फ्रॉम तथा शुमाकर जैसे विचारकों से प्रभावित हैं जिनसे गांधी की 'न्यायसिता' की अवधारणा की पुष्टि होती है।

पुस्तक में उस दस्तावेज को भी उद्धृत किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि महात्मा गांधी केवल वैयक्तिक सदाशयता पर ही निर्भर नहीं रह कर 'न्यायसिता' के लिए कानूनी और संस्थानिक व्यवस्था की पहल को भी स्वीकार करते थे। एक सरल और व्यावहारिक ढांचे का सूत्र, प्रो. एम. एल. दांतवाला ने तैयार किया था जिसे किशोरलाल मश्रुवाला और नरहरि परिख ने राज्य द्वारा कानून बना कर न्यायसिता के सिद्धांत को लागू करने के प्रयोजन से गांधीजी के सामने प्रस्तुत किया था। कुछ संशोधनों के साथ उसका अनुमोदन महात्मा गांधी ने किया था।

लेखक कहता है कि महात्मा गांधी हमें बार-बार याद दिलाते हैं कि हम केवल आर्थिक प्राणी या उपभोक्ता ही नहीं हैं। हमारी अर्थिकी एक नैतिक प्रक्रिया भी है, जो अपने आत्म की

महात्मा गांधी हमें बार-बार याद दिलाते हैं कि हम केवल आर्थिक प्राणी या उपभोक्ता ही नहीं हैं। हमारी अर्थिकी एक नैतिक प्रक्रिया भी है, जो अपने आत्म की सिद्धि में हमारी सहायक हो सकती है। न्यायसिता के सिद्धांत को सामान्यतः, एक 'यूटोपिया' या आदर्श स्वप्न तो माना जाता है, लेकिन इसकी व्यावहारिकता को लेकर अक्सर संदेह प्रकट किया जाता रहा है। संदेह का आधारभूत कारण है मनुष्य की स्वार्थ केंद्रित प्रकृति।

सिद्धि में हमारी सहायक हो सकती है। न्यायसिता के सिद्धांत को सामान्यतः, एक 'यूटोपिया' या आदर्श स्वप्न तो माना जाता है, लेकिन इसकी व्यावहारिकता को लेकर अक्सर संदेह प्रकट किया जाता रहा है। संदेह का आधार भूत कारण है मनुष्य की स्वार्थ केंद्रित प्रकृति। लेकिन महात्मा गांधी मानते हैं कि ज्यों ही मनुष्य स्वयं को समाज का सेवक मानने लगता है, समाज के लिए ही कमाता है और उसी के हितार्थ व्यय करता है, उसकी कमाई में शुद्धता का प्रवेश होने लगता है और उसका उपक्रम अहिंसा से युक्त हो जाता है। इसके अलावा अगर लोगों के दिमाग इस जीवन–पद्धति की ओर मुड़ने लगेंगे तो समाज में कटुता उत्पन्न हुए बगैर एक शांतिपूर्ण क्रांति हो जाएगी।

न्यासिता की व्यावहारिकता वाले अध्याय में आचार्य जी अपनी स्पष्ट मान्यता रखते हैं कि राज्य द्वारा न्यासिता कानून बनाने से न केवल व्यक्ति–पूंजी पर किसी प्रकार की हिंसा नहीं होगी, बल्कि प्रबंधकीय कौशल और प्रतिभा के माध्यम से लोगों को सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति के अवसर देने और उन्हें न्यायोचित मानदेय अर्थात उसे मानवीय गरिमा के साथ जीने के साधन उपलब्ध करवाने की भी व्यवस्था होगी। वह कहते हैं कि वस्तुतः, न्यायसिता की अवधारणा के मन्तव्य और तर्क को समझना अधिक जरूरी है, जिसके आधार पर विभिन्न समाज अपनी आवश्यकता और परिस्थिति के आधार पर अपनी न्यासी संस्थाओं का स्वरूप और संचालन करने के लिए स्वतंत्र होगी।

जयप्रकाश नारायण सही इंगित करते हैं कि व्यापार–उद्योग के क्षेत्र में ट्रस्टीशिप का विचार किस तरह दाखिल किया जाए, इस विषय में कोई खास काम नहीं हो पाया है। इसके लिए कोई व्यावहारिक योजना अभी तक नहीं बन सकी है। इतना ही हुआ है कि व्यापार–उद्योग की सामाजिक जिम्मेदारी की बात अब अधिक स्पष्ट होती जा रही है।

पुस्तक के अंत में उसके परिशिष्ट में आचार्य जी ने दो अध्याय विश्वस्त–वृत्ति से स्वामित्व–विसर्जन तक तथा व्यापार उद्योग का सामाजिक दायित्व क्रमशः विनोबा भावे तथा जयप्रकाश नारायण के आलेखों को शामिल करके बनाए हैं जो महात्मा गांधी की आर्थिक दृष्टि की विवेचना करते हुए उसे व्यावहारिक मानते हैं।

जयप्रकाश नारायण सही इंगित करते हैं कि व्यापार–उद्योग के क्षेत्र में ट्रस्टीशिप का विचार किस तरह दाखिल किया जाए, इस विषय में कोई खास काम नहीं हो पाया है। इसके लिए कोई व्यावहारिक योजना अभी तक नहीं बन सकी है। इतना ही हुआ है कि व्यापार–उद्योग की सामाजिक जिम्मेदारी की बात अब अधिक स्पष्ट होती जा रही है।

विनोबा स्वीकार करते हैं कि उन्हें गांधीजी द्वारा प्रयुक्त ट्रस्टीशिप शब्द का कभी आज रक्षण नहीं रहा। ट्रस्टीशिप बड़ा विचित्र शब्द है। यह अभागा शब्द इतना निकम्मा हो गया है कि इसमें नया अर्थ भरना लगभग असंभव हो गया है। फिर भी हमको अहिंसक विचार से सद्भावना–सूचक पुराने शब्दों को स्वीकार करना चाहिए। गांधीजी ने इस शब्द का प्रयोग अच्छे अततः में किया है। विनोबा ने ट्रस्ट के लिए विश्वास शब्द बेहतर माना था।

नन्द किशोर आचार्य ने इस पुस्तक में 'ट्रस्टीशिप' को 'न्यासिता' का पद देकर उसकी भारतीय आध्यात्मिक अवधारणा को ठोस आधार दिया है जो प्रचलित आर्थिक अवधारणाओं के समक्ष विकल्प प्रस्तुत करता है। पुस्तक उच्च कोटि का ऐसा अकादमिक अध्ययन है जो क्लिष्टता से बचते हुए सरस और सरल है और साथ ही गंभीर चिंतन भी है। यह पुस्तक लिख कर उन्होंने गांधी और अहिंसा के विचार को नया आयाम दिया है जो वैचारिक जगत में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

हमारे मन में यह सवाल हमेशा बना रहा है कि अर्थशास्त्र और विज्ञान के जटिल आधुनिक विषयों पर बौद्धिक विमर्श की मूल पुस्तकें हिन्दी में क्यों नहीं लिखी जाती है। जो छपती हं वह अंग्रेजी का अनुवाद होती है। हिन्दी भाषा में इन विषयों पर अकादमिक मूल चिंतन क्यों नहीं होता?

यह उनका अनुसंधान पत्र की तरह है जिसमें प्रत्येक अध्याय में दर्जनों संदर्भों का उल्लेख मौजूद है।

नंदकिशोर आचार्य ने इस कमी की पूर्ति की है। पुस्तक पढ़ते हुए गर्व का अनुभव होता है। इसे संकीर्णता नहीं कह सकते। वास्तव में ऐसी पुस्तकें पढ़ी नहीं जाती, उनका अध्ययन होता है। ❑

प्रकाशक :
प्राकृत भारती अकादमी,
13–ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर,
जयपुर 302017
पृष्ठ 88 मूल्य 300 रुपये

भाईचारा : प्रेम और अहिंसा का मूल्य, गांधी की सीख

❑



❑

राजाराम भादू

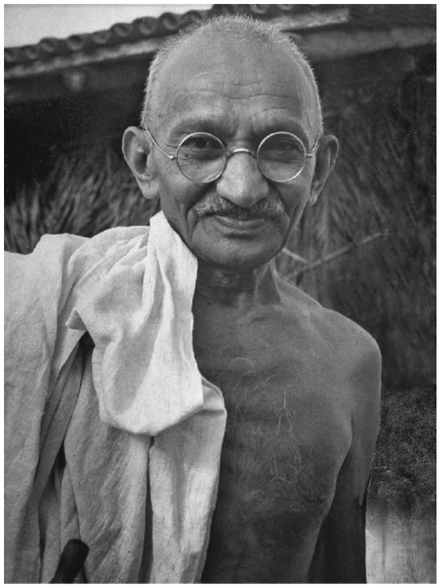
राजाराम भादू का यह आलेख उनकी पुस्तक 'बन्धुत्व और साहचर्य' से लिया गया है जिसे अपनी 'अहिंसा शांति ग्रंथमाला' के तहत प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर ने हाल ही में प्रकाशित किया है।
❑ सं.

महात्मा गांधी भाईचारे की भावना के विकास के लिए प्रेम और अहिंसा को आवश्यक मूल्य मानते थे। उनके अनुसार प्रेम का बल वही है जो आत्मा अथवा सत्य का बल है। हमें पग पग पर उसकी कार्यशीलता का प्रमाण मिलता है। वह बल न हो तो विश्व का लोप हो जाएगा, इसी बल के अत्यंत सक्रिय रूप से कार्यशील होने के कारण हजारों-लाखों लोगों का जीवन अस्तित्व में है। इसी बाल की बदौलत लाखों परिवारों के दैनंदिन जीवन में उठने वाले छोटे-मोटे झगड़े निपट जाते हैं। सैकड़ों राष्ट्र शांतिपूर्वक विद्यमान हैं। इतिहास तो वस्तुतः प्रेम या आत्मा के बल के सुचारु प्रवर्तन में उत्पन्न होने वाले व्यवधानों का अभिलेख है। दो भाइयों में लड़ाई होती है, उनमें से एक पश्चाताप करता है और अपने अंदर सुप्त प्रेम को फिर से जगाता है, दोनों भी फिर शांतिपूर्वक रहने लगते हैं, किसी का ध्यान इस घटना की तरफ नहीं जाता है। लेकिन अगर ये दोनों भाई वकीलों के हस्तक्षेप अथवा किसी अन्य कारण से हथियार उठा लें या कोर्ट में चले जायें - जो पशुबल के प्रदर्शन का ही दूसरा रूप है - तो उनके कारनामों की चर्चा तुरंत समाचारपत्रों में होने लगेगी, पड़ोसियों का ध्यान भी जायेगा और हो सकता है कि यह झगड़ा इतिहास का विषय बन जाये। और जो बात परिवारों और समुदायों के लिए सही है, वही राष्ट्रों के बारे में सही है। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है कि परिवारों पर एक नियम लागू होता है और राष्ट्रों पर कोई दूसरा। इस प्रकार, इतिहास प्रकृति के क्रम में उत्पन्न होने वाले व्यवधानों का अभिलेख है। आत्मा के बल चूंकि प्राकृतिक है, इसलिए इतिहास में उनका उल्लेख नहीं होता।

वैज्ञानिक बताते हैं कि जिन अणुओं से मिल कर हमारी पृथ्वी की रचना हुई है, उनके बीच यदि संसंजन या संसक्तिशील बल विद्यमान न हो तो पृथ्वी खंड-खंड हो जायेगी और हमारा अस्तित्व समाप्त हो जायेगा, और जिस प्रकार जड़ पदार्थों में संसजन बल है उसी प्रकार सभी चेतन पदार्थों में भी यह बल उपस्थित होना चाहिये और चेतन पदार्थों में इस संसक्तिशील बल को ही गांधी प्रेम का नाम देते हैं। हमें इसके दर्शन पिता-पुत्र में, भाई-बहन में और मित्र-मित्र में होते है, लेकिन हमें समस्त

प्राणी–जगत के बीच इस बल के प्रयोग का अभ्यास डालना चाहिए, इसी प्रयोग में हमारा ईश्वर का ज्ञान निहित है। जहां प्रेम है वहां जीवन है। घृणा विनश की ओर ले जाती है।

गांधी उल्लेख करते हैं, आज तक जितने उपदेशक हुए हैं उन्होंने न्यूनाधिक शक्ति के साथ इस नियम का प्रचार किया है। यदि प्रेम जीवन का नियम न होता तो मौत के बीच जीवन के सातत्व के दर्शन न होते। जीवन ने सदा ही मृत्यु पर विजय पाई है। मनुष्य और पशु के बीच यदि कोई मौलिक भेद है तो वह मनुष्य द्वारा प्रेम के नियम की अधिकाधिक स्वीकृति और अपने व्यक्तिगत जीवन मे उसे व्यवहार में लाने का प्रयास है। विश्व के सभी प्राचीन और आधुनिक संत अपनी–अपनी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार हमरे अस्तित्व के इसी नियम के जीते जागते उदाहरण थे। यह सही है कि प्रायः हमारे भीतर बैठ पशु बड़ी सरलता से विजयी होता दिखाई देता है, किन्तु इससे प्रेम का नियम झूठ साबित नहीं होता। इससे सिर्फ यह साबित होता है कि प्रेम के नियम पर आचरण करना कठिन है। जो नियम स्वयं सत्य के समान ऊंचा है उसका पालन करना कठिन नहीं तो और क्या होगा? जब सभी लोग इस नियम का पालन करने लगेंगे तो पृथ्वी पर ईश्वर का उसी प्रकार राज्य हो जाएगा, जिस प्रकार स्वर्ग पर है। यहां यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि प्रिथी और स्वर्ग दोनों हमारे अपने भीतर ही हैं। हम पृथ्वी को तो जानते हैं पर अपने भीतर के स्वर्ग से अनजान हैं। अगर यह माँ लिया जाय कि कुछ लोगों के लिए प्रेम का व्यवहार करना संभव है



यह सही है कि प्रायः हमारे भीतर बैठ पशु बड़ी सरलता से विजयी होता दिखाई देता है, कन्तु इससे प्रेम का नियम झूठ साबित नहीं होता। इससे सिर्फ यह साबित होता है कि प्रेम के नियम पर आचरण करना कठिन है। जो नियम स्वयं सत्य के समान ऊंचा है उसका पालन करना कठिन नहीं तो और क्या होगा?

तो यह माँ लेना अहंकार–पूर्ण होगा कि शेष लोगों द्वारा इसका आचरण किए जाने की कोई संभावना ही नहीं है। बहुत ज्यादा वक़्त नहीं गुजरा कि हमारे पूर्वज नरभक्षी थे, वे और भी ऐसे बहुत से काम करते थे जिन्हें आज हम घृणा की दृष्टि से दहखते हैं। उस जमाने में भी निस्संदेह डिक शपर्ड्स जैसे लोग रहे होंगे जिन पर लोग हँसते होंगे और अपने ही साथी मनुष्य को न खाने के (उनके लिए) विचित्र सिद्धांत का प्रचार करने पर शायद उन्हें टिकटी में खड़ा करके सजाएं भी दी गयी होंगी।

महात्मा गांधी अपने जीवन के एक स्वर्णिम नियम के बारे में बताते हैं, जब हम सेवा करना चाहें तो बंधुता स्थापित करें और जब कोई अधिकार मांगना चाहें तो बंधुता पर जोर न दें। वे आगे कहते हैं, मैंने जीवन के इस नियम को भारत के अन्तः प्रांतीय संबंधों पर भी लागू किया है। मानव मामलों में मधुर संबंध बनाए रखने का कोई और तरीका मुझे नहीं आता और वर्षों के लंबे अनुभव से मेरी यह धारणा और भी पुष्ट हो गई है कि जहां–जहां यह स्वर्णिम नियम भंग हुआ है वहां–वहां कलह, झगड़े और सर–फुटौवल तक की नौबत आ गई है। मेरा प्रमुख उद्देश्य समूची मानवता के लिए समान व्यवहार सुनिश्चित करना हाई और उस समान व्यवहार का अर्थ है – सेवा की समानता।

उनकी मान्यता है कि हमें अपने प्रेम की परिधि का विस्तार तब तक करते जाना चाहिए जब तक उसमें पूरा गांव न समय जाये। इसी प्रकार गांव को शहर, शहर को प्रांत, प्रांत तो देश और देश को समूची दुनिया को अपने प्रेम के राज्य में समेत लेना चाहिए। हम ऐसे समय में रह रहे हैं जब मूल्य बड़ी तेजी से बदल रहे हैं। हमें धीमे परिणामों से संतोष नहीं हो रहा। हमें केवल अपनी ही जाति के लोगों या अपने ही देश के कल्याण से संतोष नहीं हो रहा। हम समूची मानवता के लिए सोचते है या सोचना चाहते हैं। ये बातें मानवता की अपने लक्ष्य की खोज के लिए बड़ी लाभकारी है।

सहिष्णुता के संदर्भ में गांधी क्षमा की चर्चा करते हैं और इसे आत्मा का गुण मानते हैं जो सकारात्मक है।

भगवान बुद्ध ने भी कहा है कि क्रोध को-क्रोध से जीतो। गांधी प्रश्न करते हैं, यह अ-क्रोध क्या है? वे इसे भी एक सकारात्मक गुण कहते हैं जिसका अर्थ उदारता या प्रेम है। वे आह्वान करते हैं कि तुम्हें अपने अंदर के इस सद्गुण का विकास करना चाहिए जिससे कि तुम एक क्रोधी व्यक्ति के पास जाकर उसके क्रोध का कारण पूछ सको और यदि तुमने उसे किसी रूप में चोट पहुंचाई है तो अपना सुधार कर सको। अन्यथा उसे उसकी त्रुटि बता सको और यह प्रतीति कर सको कि क्रोधित होना गलत है। आत्मा के गुण का यह बोध और उसका स्वविवेक प्रयोग केवल मनुष्य का ही नहीं बल्कि उसके चारों ओर के वातावरण का उन्नयन भी करता है। यह अवश्य है कि इसका प्रयोग वही कर पाएगा जिसने प्रेम के गुण का विकास कर लिया है। इसमें संदेह नहीं कि निरंतर प्रयास के द्वारा इस गुण का विकास किया जा सकता है।

गांधी कहते हैं कि परस्पर विश्वास और परस्पर प्रेम कोई विश्वास और प्रेम नहीं है। प्रेम तो वह है कि जो तुमसे घृणा करते हैं उनसे प्रेम करो, अपने पड़ोसियों के प्रति अविश्वास होते हुए भी उनसे प्रेम करो। मेरे पास अंग्रेज अधिकारी वर्ग में अविश्वास करने के ठोस कारण है। यदि मेरा प्रेम स्वच्छ है तो मुझे अपने अविश्वास के बावजूद प्रेम करना चाहिए। उस प्रेम का क्या मूल्य है जो केवल तब तक टिके जब तक मुझे अपने मित्र के प्रति विश्वास है। ऐसा तो चोर भी करते हैं। विश्वास टूटते ही वे एक दूसरे के शत्रु बन जाते हैं।

सामाजिक प्रगति में पीछे रह गए लोगों के लिए गांधी ने सर्वोदय का विचार प्रस्तुत किया। इसी नाम से उन्होंने एक पत्रिका भी निकाली। बाद में विनोबा भावे ने सर्वोदय के विचार को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया। ❑

86 मानसागर कॉलोनी, श्योपुर रोड़,
प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर



कविता

जब पेड़ के पास जाओ
पूर्वाग्रहों को परे रख देना
हरी भरी प्रकृति के
सपने देखना

नदीके निकट जाओ
ज्ञान-चक्षु बंद रखना
मन को खुला रख
मंद कलकल छंद सुनना

बुद्धि का बोझ ढोकर
किसी बच्चे से न मिलना
निर्भार मन से
प्रभु का साक्षात्कार करना

गुरुत्व के पार
धरा-गगन का वितान देखना

त्याग कर तर्क सिद्धांत
अबोध निश्छल मन साधना

विद्वता, चातुर्य, कौशल छोड़
आनन्द के ओस कण चूमना। ❑

दशरथ कुमार सोलंकी
281 एबी, अमरावती नगर, पाल,
जोधपुर-342014

शिक्षा के आंकड़े केवल नीति निर्माताओं के लिए ही न हों



पल्लवी मुखेड़कर



रोहन देशपांडे



श्वेता चक्रवर्ती

ज्ञान प्रकाश फाउंडेशन से जुड़े तीनों लेखक इस आलेख में जोर देते हैं कि नीतिगत आंकड़े शिक्षकों को भी सक्षम करने वाले हों।

❑ सं.

❑

आंकड़े इकट्ठा करना और उसका विश्लेषण करना, कार्यक्रम मूल्यांकन और सुधार प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा होता है। उदाहरण के लिए छात्रों के प्रदर्शन, उपस्थिति और सहभागिता से जुड़े आंकड़े जुटाकर और उनका विश्लेषण कर, शिक्षक अपने पढ़ाने के तरीक़ों में बेहतरी ला सकते हैं। उसी तरह प्रशासन एक समेकित आंकड़े का उपयोग – कार्यक्रम के क्रियान्वयन के बारे में जानने, प्राप्त लक्ष्यों के बारे में समझने और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने के लिए कर सकते हैं। यही आंकड़ा नीति निर्माताओं को यह तय करने में भी मदद कर सकता है कि संसाधन कहां आवंटित किए जाएं और कौन से कार्यक्रम लागू किए जाएं।

शिक्षा के क्षेत्र में, यदि किसी कार्यक्रम में बच्चे शामिल हैं तो आंकड़े हासिल करने का सबसे आम बिंदु बच्चों के सीखने से जुड़े आंकड़े होते हैं। ये आंकड़े मुख्यरूप से दो तरह के भागीदारों के लिए होते हैं: निर्णय लेने वालों तथा कक्षा में शिक्षक। निर्णायक भूमिकाओं में बैठे लोगों के सामने जो आंकड़े रखे जाते है, वे आमतौर पर बच्चे के समेकित मूल्यांकन डेटा, स्कूल के बुनियादी ढांचे की जानकारी, अगले शैक्षणिक वर्ष की योजनाओं से जुड़े होते हैं। शिक्षकों के लिए तैयार किए गए आंकड़े ज्यादातर बच्चों का व्यक्तिगत मूल्यांकन आंकड़ा होता है जो उनकी खुद के पढ़ाने के तरीक़ों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

आंकड़ों की मांग ज्यादातर, उच्च पदों पर बैठे लोगों द्वारा निचले स्तर पर मौजूद लोगों से की जाती है। आमतौर पर ये प्रदर्शन से जुड़े होते हैं, फिर चाहे वह बच्चों का हो, शिक्षक का हो या अधिकारियों का। यह माना जाता है कि किसी बच्चे का मूल्यांकन परीक्षा में उसे मिले अंकों के आधार पर किया जाता है तो शिक्षक का मूल्यांकन उनकी कक्षा में 'अच्छा' प्रदर्शन करने वाले छात्रों की संख्या के आधार पर होता है। इससे शिक्षकों में आंकड़ों को लेकर डर पैदा होता है। नतीजतन, शिक्षक या तो आंकड़े जुटाने की प्रक्रिया से अलग रहते हैं या फिर उच्च अधिकारियों को ऐसी रिपोर्ट भेजते हैं जो कक्षा में उनके छात्रों के सही प्रदर्शन को नहीं दिखाती है।

शिक्षक के पास प्रत्येक छात्र के प्रदर्शन की जानकारी देने वाले आंकड़े होते हैं जिनका उपयोग बदलाव लाने के लिए किया जा सकता हैलेकिन,असल में, यह बच्चों की शिक्षा में सुधार लाने के लिए सीधे तौर पर उनके शिक्षण के तरीक़ों में कोई मदद नहीं करता है।

किसी भी तरह का आंकड़ा तभी उपयोगी होता है जब इसके



बीकानेर में छगन मोहता स्मृति व्याख्यानमाला
विचारक दुबे का सम्बोधन

डॉ.छगन मोहता स्मृति व्याख्यानमाला की 20 वीं कड़ी में पिछले दिनों बीकानेर की प्रौढ़ शिक्षण समिति के खचाखच भरे प्रौढ़ शिक्षा भवन में देश के जानेमाने विचारक और पत्रकार अभय कुमार दुबे ने अपने सम्बोधन में अंग्रेजकालीन औपनिवेशिक सोच और यूरोपीय विचारों के हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था पर अब तक प्रभाव बने रहने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि उससे मौलिक भारतीय चिंतन की क्षमता ही समाप्त हो गई है।

दुबे का कहना था कि अंग्रेजी भाषा में शिक्षा और उसी भाषा के संस्कार में चिंतन को गर्व और उपलब्धि मान लेने से हमारे देश की समृद्धज्ञान परपंरा नष्ट हो गई।

उनका कहना था कि हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को भारतीय भाषाओं में ढालना होगा। इसके अलावा हमारी साहित्य निधियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर प्रसारित करने के साथ ही हमें पश्चिम से लंबे समय तक बौद्धिक मोर्चाबंदी भी करनी होगी। पश्चिम के प्रभाव को ही आधुनिकता समझना बंद करके भाषा, शिक्षा और ज्ञान की औपनिवेशिक दृष्टि की जगह भारतीय चिंतन और ज्ञान परंपरा को स्थापित करना होगा। हालांकि एक लंबे भटकाव से निकाल कर सही मार्ग पर आने में समय लगेगा, लेकिन इस दिशा में शुरुआत करने की नितांत आवश्यकता है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्य अध्येता डॉ.ब्रजरतन जोशी ने याद दिलाया कि भारतीय चिंतन कहता है कि यदि ज्ञान को व्यवहार में नहीं लिया जाता तो वह बोझ बन जाता है। इसलिए आत्मचिंतन को क्रिया में उतारना ही चिंतन की सार्थकता है।

बीकानेर की प्रौढ़ शिक्षण समिति के अध्यक्ष डॉ.ओम कुवेरा ने डॉ.छगनमोहता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चिंतन और प्रज्ञा के क्षेत्र में उनका व्यक्तित्व बेजोड़ था। वे अपने गुणों से सुधि समाज के लिए अपने जीवन काल में ही तीर्थ समान पूज्य हो गए।

प्रारंभ में मानद सचिव श्रीमती सुशीला ओझा ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए मुख्यवक्ता का परिचय देते हुए कहा कि व्याख्यानमाला का आयोजन हममें नवीन ऊर्जा भरने वाला अवसर होता है।अंत में संस्था के उपाध्यक्ष अविनाश भार्गव ने व्याख्यानमाला को सफल बनाने के लिए आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

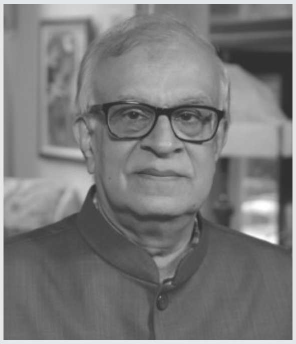
30 जुलाई, 2023 को आयोजित व्याख्यानमाला की 20 वीं कड़ी का व्याख्यान देने आए अभय कुमार दुबे का साफा पहना कर स्वागत किया गया तथा उन्हें बीकानेर गोल्डआर्ट से निर्मित स्मृतिचिह्न प्रदान किया गया। उनके व्याख्यान का विषय था:'भाषा, शिक्षा और ज्ञान का विउपनिवेदशीकरण'। व्याख्यानमाला के आयोजन का सुंदर संचालन मुकेश व्यास ने किया। ❑ **ओम प्रकाश सुथार, निदेशक , जन शिक्षण संस्थान, बीकानेर**

उपयोगकर्ता के पास इस पर आधारित कुछ फ़ैसले लेने की शक्ति होती हो। आंकड़ों को एकत्र करना और व्यवस्थित करना आसान होना चाहिए और हर स्तर पर उपयोगकर्ताओं के पास उनका इस्तेमाल कर कार्रवाई करने का अधिकार होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में, आंकड़ों का उपयोग केवल नीतिनिर्माण के स्तर पर ही किया जाता है। इसमें से शिक्षकों का नज़रिया गायब होता है – कक्षा के संदर्भ में, एकत्र किए गए आंकड़े से प्रत्येक छात्र ने क्या सीखा है इसकी स्पष्ट जानकारी के साथ शिक्षकों को इतना सक्षम होना चाहिए कि वे अपने छात्रों की ज़रूरतों की पहचान कर सकें और प्रत्येक बच्चे के सीखने से जुड़े आंकड़ों के आधार पर उन्हें सिखाने के उपयुक्त तरीके खुद अपना सकें।

दरअसल यह एक मिथक है। आंकड़ा किसी कार्यक्रम के सभी स्तरों पर हितधारकों के लिए उपयोगी हो सकता है। आंकड़ों की उपयोगिता और प्रमाणिकता की जांच सेल्फ़-चेक द्वारा की जा सकती है। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे लेकर कई कार्यक्रम संघर्षरत रहते हैं।❑

भारत को टेक कुली सिंड्रोम से बाहर आना होगा

❑



❑

राजीव मल्होत्रा

अमेरिका स्थित इन्फीनिटी फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष राजीव मल्होत्रा का एक संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य का संपादित अंश ।
❑ सं.

भारत का टेक्नॉलजी उद्योग मूल रूप से श्रम निर्यात पर आधारित है। हम एक तकनीकी व्यक्ति को प्रति वर्ष हजारों डॉलर पर नौकरी पर रखते हैं और उसके श्रम को किसी अमेरिकी कंपनी को 30 या 40 हजार डॉलर में बेचते हैं। इस काम में हम बहुत पैसा कमाते हैं और हम अरबपति बन जाते हैं। ऐसा जो करता है उसे सब कहते हैं वाह, यह आदमी क्या स्मार्ट है।ऐसा करने वाले कोई मूल्य वर्धन नहीं करते हैं। इसलिए हमारे यहां प्रौद्योगिकी का कोई आविष्कार नहीं होता है, कोई बौद्धिक संपदा का निर्माण नहीं होता है। केवल त्वरित पैसा कमाना होता है। और हमने इन अरबपतियों को ऐसे हीरो बना दियाहै, जैसे उन्होंने हम पर कोई एहसान किया हो। यह भारी विडंबना है।

जब भी आप किसी बहुत बड़ी टेक कंपनी जैसे गूगल, फेसबुक, माइक्रोसॉफ़्ट, ऐप्पल, अमेज़न आदि पर जाएं और देखें। आप कुछ फ्रांसीसी कंपनियों के पास जाएं। जैसे राफेल कंपनी पर जाएं जो जेट विमान, युद्धक विमान बनाती है और भारत उन विमानों को भारी धनराशि देकर खरीदता है। भारत जिन तकनीकों को खरीदने के लिए जिन कंपनियों को इतने पैसे चुका रहा है उनके इंजीनियरों का बड़ा प्रतिशत भारतीय हैं। राफेल का इतना महंगा होने का कारण यह है कि उसका एक जेट विमान 50 पायलटों का काम कर सकता है। क्योंकि आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस एआई के जरिए यानी सेंसर और मॉनिटर के जरिए चारों तरफ अच्छे से नज़र रख सकता है। लेकिन यह एआई कहां से आई? जब जाइये और उनकी रक्षा प्रयोगशालाओं और उनके सभी उप-ठेकेदारों और उनकी प्रणालियों की पाइपलाइन श्रृंखला को देखिए वहां बहुत सारे भारतीय काम करते मिलेंगे। तो हम तकनीकी कुलियों की तरह वहां माल ढोने का काम करते हैं। काम हम कर रहे हैं और उससे ज्ञान और मूल्य वे प्राप्त कर रहे हैं। फिर हम उन्हीं से वह टेक्नोलॉजी वापस आयात करते हैं। मैं पिछले 15 वर्षों से कह रहा हूं कि हम लोग इन बिचौलियों को बड़े नायकों की तरह पूज रहे हैं जो हमारे बौद्धिक श्रम की ठेकेदारी करते हैं। क्योंकि उन्हें पैसा मिल गया है तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे अपने पैसे के कारण महान हैं। वे इस मानव श्रम के निर्यात से कमाए धन को वापस प्रौद्योगिकी और उत्पादों के निर्माण में

लगाने के प्रति गैर-जिम्मेदार रहे हैं। इसकी तुलना चीन से करें। चीन की शुरुआत भी हमारी तरह गरीबी से हुई और उसे विदेशी निवेश की जरूरत थी और वह सस्ता श्रम बेचना चाहता था। इसलिए विनिर्माण क्षेत्र में उन्होंने सस्ता श्रम बेचा जैसे हमने सेवा क्षेत्र में बेचा। लेकिन हममें और उनमें एक अंतर रहा। चीनियों ने सब कुछ बनाने वाले निजी क्षेत्र के साथ एक समझदार साझेदारी की कि आप अमेरिकियों को सस्ता श्रम बेचकर जो भी लाभ कमाएंगे, उसका 25 से 50 प्रतिशत के बीच को खुद अपनी टेक्नोलॉजी बनाने में निवेश करेंगे। उन्होंने ऐसा किया। तो अब वहां एप्पल मोबाइल फोन बनता है तो उसके मुकाबले चीनी अपनाभी मोबाइल फोन बनाते हैं। इलेक्ट्रॉनिक वाहन लें तो वे टेस्ला को आने देते हैं तो साथ ही अपना वाहन भी बनाते हैं। चीनी लोग ऐसा मिसाइल, एयरोस्पेस में भी ऐसा करता है। भले ही वे मूलतः चुराकरया नकल करके कर रहे हैं। वे पैसा पाने के लिए श्रम को सस्ते में बेचते हैं और वे उस पैसे का आधा हिस्सा अपने खुद के उत्पाद के बना कर आगे निकल जाते हैं।

वॉल स्ट्रीट में बैंकिंग चलाने वाले लाखों भारतीय हैं। संपूर्ण निवेश उद्योग, फार्मास्युटिकल अनुसंधान, ऑटोमोबाइल अनुसंधान में भारतीयों का बोलबाला है। हमारे लोग ऐसे सॉफ्टवेयर लिख रहे हैं जिससे भविष्य की बैंकिंग, भविष्य की भुगतान प्रणाली आएगी। वहीं सॉफ्टवेयर भारत विदेशी कंपनियों से बड़े दाम पर खरीदेगा। लेकिन हमने इसका कभी पता नहीं लगाया है या हमने इसके बारे में कभी सोचा नहीं। हमारी बड़ी-बड़ी टीसीएस, इंफोसिस, एचसीएल, महिंद्रा जैसी कंपनियों ने इसके बारे में नहीं सोचा। उन्हें अपने मुनाफे के पैसे में से कुछ भी अनुसंधान में निवेश करने की कोई इच्छा नहीं है। यदि उन्होंने पिछले 20 या 25 वर्षों में ऐसा निवेश किया होता तो अब तक हमारे पास बड़ी मात्रा में बौद्धिक संपदा होती। आज हम यह टेक कुली सिंड्रोम में जी रहे हैं। हमारे अरबपतियों को इसका जवाब देना होगा।

आज भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती यहां की परंपराओं, शास्त्रों, महाकाव्यों और वेदिक भाषा की आलोचना करने वाले नस्ल और जाति सिद्धांतों की सुनामी भी है। यह सुनामी अमेरिकी शैक्षणिक संस्थानों, वहां के मुख्य निजी क्षेत्र और वहां की सरकार से आती है। वह अमेरिका की विदेश नीतितथा उसके विदेश विभाग की वीज़ा नीति के माध्यम से हमें निर्यात होती है। विश्व आर्थिक मंच इस पर बड़े पैमाने पर जोर देता है। हमारे लोगों को दावोस सम्मेलनों में जाना और वहां उनके लोगों के साथ मेलजोल पसंद आता है। उनको सुन कर तथा उनसे मिल कर हमारे लोग बहुत अच्छा महसूस करते हैं। वे यह सब जब वापस आते हैं तब उनके सिद्धांत साथ में ले कर लौटते है।

भारतीय कॉरपोरेट सेक्टर, अमेरिकी कॉरपोरेट सेक्टर को ले कर आता है। भारतीय शिक्षाविद् अमेरिकी शिक्षाविदों को लाते हैं।वे लोग हमें सिखाते हैं कि हमारे पास जो कुछ है वह पिछड़ापन है, अन्याय है गैर बराबरी है और उनके सामाजिक सिद्धांतों के नजरिए से हम अपने आप को देखें और अपने पर ग्लानि करें और टूट कर उनमें परिवर्तित हो जायें। ❑



टीवी साक्षात्कार में बातचीत शैली का जनक नहीं रहा

जाने-माने टीवी प्रसारक माइकल पार्किंसन का 88 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। वे 1971 से 2007 तक अपने चैट शो की मेजबानी करने और दुनिया की कुछ सबसे बड़ी हस्तियों के साक्षात्कार लेने के लिए जाने जाते हैं।

1971 में, उनका बीबीसी चैट शो, पार्किंसन, शनिवार की देर रात के स्लॉट में शुरू हुआ, और 1982 तक चला। यह शो 1998 से फिर से शुरू हुआ और 2007 तक चला।

पार्किंसन ने बातचीत शैली में साक्षात्कार की शुरुआत की, और मेहमानों को अपने सहज प्रश्नों से हमेशा सहज बनाया।

वर्ष 2003 के एक साक्षात्कार में, पार्किंसन ने अनुमान लगाया कि उन्होंने अपने करियर के दौरान 2,000 से अधिक मशहूर हस्तियों का साक्षात्कार लिया है।❑

गरीबों का मेवा अमरूद

❑

डॉ. देवदत्त शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ समिति के औषध उद्यान में हाल ही में अमरूद का पौधा रोप गया है। इस उद्यान में लगे वृक्षों की जानकारी की श्रंखला में इस बार अमरूद पर चर्चा। ❑सं.

अमरूद भारत में व्यावसायिक रूप से पैदा किये जाने वाले महत्वपूर्ण फलों में से एक है। यह आम, केला और नींबू के बाद चौथा सबसे महत्वपूर्ण फल है।

अमरूद उष्णकटिबंधीय अमेरिकी मूल का फल है जहां यह जंगली रूप में पाया जाता है। भारत में इसका प्रवेश सत्रहवीं शताब्दी में हुई हुआ। इन तीन सौ सालों में ही वह भारत की जलवायु में इतना घुल-मिल गया है कि अब इसकी खेती आम होती है। हालांकि उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, गुजरात और आंध्र प्रदेश ऐसे प्रमुख है जहां इसकी खेती प्रमुख रूप से होती है। राजस्थान के भरतपुर और सवाई माधोपुर में इसकी खूब उपज होती है। अमरूद का वानस्पतिक नाम सीडियम ग्वायवा, प्रजाति सीडियम, जाति ग्वायवा।

अमरूद मीठा और स्वादिष्ट फल होने के साथ-साथ कई औषधीय गुणों से भरा हुआ है। जाड़े की ऋतु में यह इतना अधिक तथा सस्ता मिल जाता है कि लोग इसे गरीबों का एक प्रमुख फल कहते हैं जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। इसमें विटामिन सी' खूब होता है। इसके अतिरिक्त इस फल में विटामिन ए' तथा बी' भी पाए जाते हैं तथा इसमें लोहा, चूना तथा फास्फोरस भी अच्छी मात्रा में होते हैं। यह फाइबर से भरपूर होता है जबकि इसमें कोलेस्ट्रॉल ना के बराबर होता है। यह वजन कम करने में भी मददगार है तथा एंटीऑक्सीडेंट लाइकोपीन की भरपूर मात्रा के कारण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के साथ शरीर में कैंसर सैल को बढ़ने से रोकने का भी काम करता है।विटामिन ए आंखों को स्वस्थ रखने का काम करता है। इसमें मौजूद फाइबर और पोटाशियम ब्लड में कोलेस्ट्राल कंट्रोल करने में मददगार होते है। इसमें मौजूद फाइबर डायबिटीज कंट्रोल करने में भी मददगार है जो शरीर में शर्करा की मात्रा को संतुलित तरीके से अवशोषित करने का काम करता है। इससे खून में शूगर की मात्रा में जल्दी से बदलाव नहीं होता। इसमें भरपूर मिलने वाला मैग्निशियम तनाव के हार्मोंस को कंट्रोल करने का भी काम करता है।

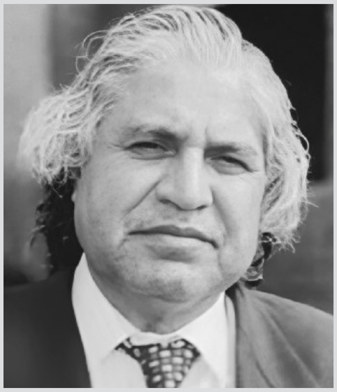
एंटी एजिंग गुणों से भरपूर अमरूद स्किन के डैमेज सैल की मरम्मत कर उसे स्वस्थ रखता है, जिससे जल्दी झुर्रियां व झाइयां भी नहीं पड़ती। इसकी पत्तियों को पीसकर पेस्ट बना कर आंखों के नीचे लगाने से आंखों की सूजन और काले घेरे सही होते हैं। काले नमक के साथ अमरूद का सेवन करने से कईं पाचन संबंधी



परेशानियां दूर होती है। दंत रोगों के लिए अमरूद रामबाण साबित होता है। अमरूद के पत्तों को चबाने से दांतों के कीड़ा और दांतों से सम्बंधित रोग भी दूर होता है।

वर्षा ऋतु में अमरूद के पेड़ फूलते हैं और जाड़े में फल देते हैं। एक पेड़ लगभग 30 वर्ष तक भली भाँति फल देता है और प्रति पेड़ 500 से 600 फल प्राप्त होते हैं। कीड़े तथा रोग से वृक्ष को साधारणात: कोई विशेष हानि नहीं होती।

अमरूद का प्रसारण अधिकतर बीज द्वारा किया जाता है, परंतु अच्छी जातियों के गुणों को सुरक्षित रखने के लिए आम की भाँति भेटकलम (इनाचिंग) द्वारा नए पौधे तेयार करना सबसे अच्छी रीति हैं। बीज मार्च या जुलाई में बो देने चाहिए। वानस्पातिक प्रसारण के लिए सबसे उतम समय जुलाई अगस्त है। पौधे 20 फुट की दूरी पर लगाए जाते हैं। अच्छी उपज के लिए दो सिंचाई जाड़े में तथा तीन सिंचाई गर्मी के दिनों में करनी चाहिए। गोबर की सड़ी हुई खाद या कंपोस्ट, 15 गाड़ी प्रति एकड़ देने से अत्यंत लाभ होता है। स्वस्थ तथा सुंदर आकर का पेड़ प्राप्त करने के लिए आरंभ से ही डालियों की उचित छँटाई करनी चाहिए। पुरानी डालियों में जो नई डालियाँ निकलती हैं उन्हीं पर फूल और फल आते हैं। ❑



भारतीय प्रकाशन जगत के पुरोधा का निधन

भारतीय प्रकाशन जगत के पुरोधा माने जाने वाले अनुभवी प्रकाशक, शिक्षाविद् और लेखक नरेंद्र कुमार का 10 अगस्त को निधन हो गया। वे 85 वर्ष के थे। वे हर-आनंद प्रकाशन के संस्थापक अध्यक्ष थे।

कुमार विकास पब्लिशिंग हाउस के प्रबंध निदेशक भी रहे। उन्होंने भारतीय प्रकाशन पर विस्तार से न केवल लिखा बल्कि वैश्विक मंचों पर उसके मुद्दे को बढ़ावा दिया। उनकी रुचियां विविध थीं और उन्होंने बांग्लादेश, रूस, चीन, मध्य एशिया और अफ्रीका के साथ-साथ शिक्षा पर भी किताबें लिखीं।

वे यूनेस्को और डब्ल्यूआई पीओ के विभिन्न कार्य समूहों के सदस्य और फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के अध्यक्ष भी रहे। वह डीपीएस स्कूल समूह के पूर्व अध्यक्ष थे और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बदलती सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी शिक्षा प्रणाली बनाने के प्रयासों में अपनी भूमिका निबाही।

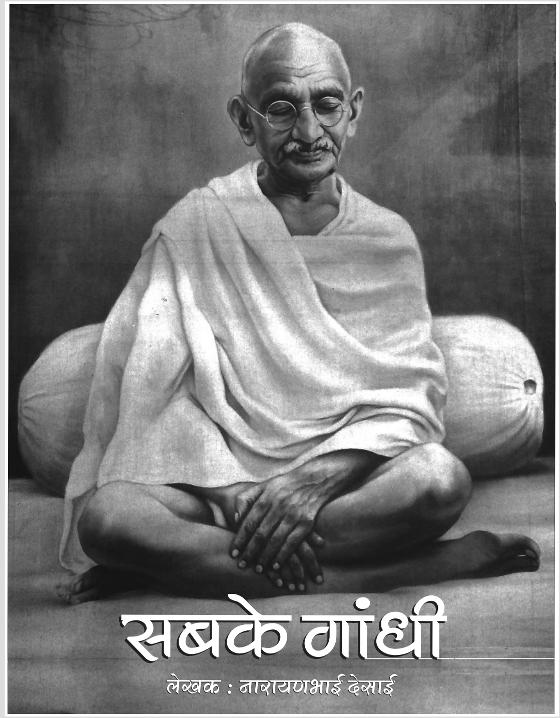
खेल प्रशासन में भी उनकी गहरी रुचि थी और वे दिल्ली लॉन टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष थे।वह कई अन्य प्रसिद्ध संगठनों के प्रमुख होने के अलावा वर्ल्ड इंटेलेक्चुअल फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष भी थे।

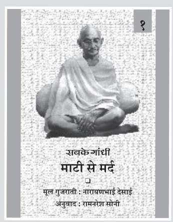
उन्होंने अंग्रेजी और हिंदी में 'पायनियर' अखबार भी निकाला जिसके वे प्रकाशक और मुद्रक थे।

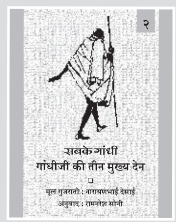
कुमार को इटली के 'ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ इटालियन सॉलिडेरिटी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

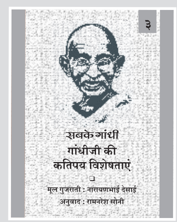
दोनों बेटे अशोक और आशीष, प्रकाशन व्यवसाय से ही जुड़े हैं जबकि उनकी बेटी, वकील है। ❑

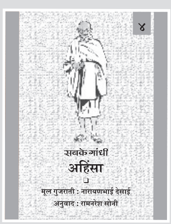
स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा क्लासीफाइड प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित तथा
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। संपादक- राजेन्द्र बोड़ा

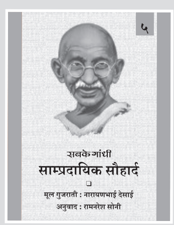


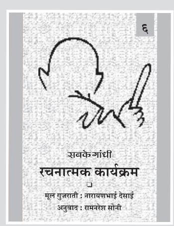


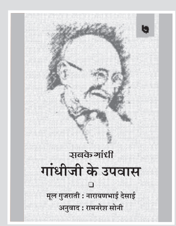


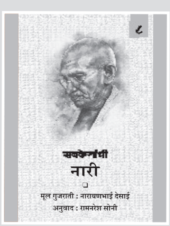


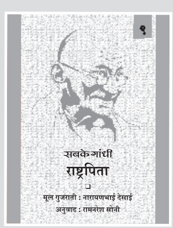


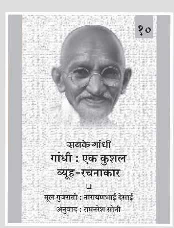


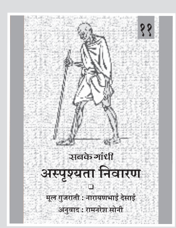


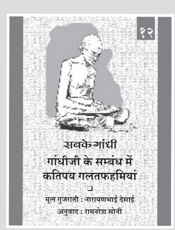














सहयोग राशि के लिए
बैंक विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur
I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH
(Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077

सबके गांधी

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

12 पुस्तकों के एक सैट की सहयोग राशि रुपये 500/– मात्र डाक खर्च अलग से देय होगा।